

निदेशकों की रिपोर्ट

प्रबंधन विवेचन और विश्लेषण

आर्थिक पृष्ठभूमि और बैंकिंग परिवेश

भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट आई है और सूझबूझ से किए गए प्रयासों के कारण वर्ष 2007-09 के वैश्विक संकट के बुरे प्रभाव से उबर चुकी है। जीडीपी में वित्त वर्ष 2009 में 6.8% और वित्त वर्ष 2010 में 8.0% की वृद्धि के मुकाबले वित्त वर्ष 2011 में 8.5% की वृद्धि हुई। कृषि क्षेत्र में जबरदस्त सुधार दिखाई दिया और इसमें वित्त वर्ष 2011 में 6.6% की वृद्धि हुई जबकि वित्त वर्ष 2010 में 0.4% की मामूली सी वृद्धि हुई थी। जीडीपी की ऊंची विकास दर में भी कृषि क्षेत्र का प्रमुख योगदान रहा।

औद्योगिक विकास भी कुल मिलाकर संतोषजनक रहा पर इसमें उतार-चढ़ाव होता रहा। वर्ष 2010-11 के दौरान औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में 7.8% की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 10.5% की वृद्धि हुई थी, हालांकि वृद्धि दर अप्रैल 2010 में 16.6% से दिसंबर 2010 की 2.6% के बीच घटती-बढ़ती रही। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक 12 महीनों में से चार महीनों के दौरान 10% से अधिक, पांच महीनों में 5% से कम और तीन महीनों में लगभग 7% रहा। उपभोक्ता वस्तुओं (20.9%), मध्यवर्ती वस्तुओं (8.8%) और पूंजीगत वस्तुओं (9.3%) में वित्त वर्ष 2011 में कुल औद्योगिक उत्पादन सूचकांक से उच्चतर वृद्धि दर्ज की गई परंतु विनिर्माण क्षेत्र की विकास दर वित्त वर्ष 2010 की 8.8% की तुलना में वित्त वर्ष 2011 में 8.3% रह गई। जीडीपी में सेवा क्षेत्र का पांच में से लगभग तीसरा हिस्सा रहता है। इसकी वित्त वर्ष 2010 की 9.7% वृद्धि दर की तुलना में वित्त वर्ष 2011 में 9.2% वृद्धि दर रही। ऐसा मुख्यतया 'सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाओं' की वृद्धि दर नरम रहने के कारण हुआ। इसकी वृद्धि दर वित्त वर्ष 2011 में 7.0% रही जबकि वित्त वर्ष 2010 में 11.8% रही थी। फिर भी, 'व्यापार, होटल, परिवहन और संचार' तथा 'वित्त, बीमा, रियल इस्टेट और व्यवसाय सेवा क्षेत्र' में वित्त वर्ष 2011 में उच्चतर वृद्धि क्रमशः 10.3% (वित्त वर्ष 2010 में 9.7%) और 9.9% (वित्त वर्ष 2010 में 9.2%) दर्ज हुई।

विकसित देशों में वाणिज्यिक निर्यातों की विकास दर तेज रहने के चलते इनमें वित्त वर्ष 2011 में 37.6% की वृद्धि हुई जबकि आयातों में 21.6% की वृद्धि हुई जिससे व्यापार घाटा घटकर 104.8 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर पर आ गया जो वित्त वर्ष 2010 के 109.6 बिलियन अमरीकी डॉलर स्तर से थोड़ा नीचे है। विदेशी विनिमय बाजार में क्रमिक उतार-चढ़ाव देखा गया और रुपया वित्त वर्ष 2011 के दौरान उछलकर ₹ 45.57 प्रति अमरीकी डॉलर पर आ गया जबकि वर्ष 2009-10 में

औसतन ₹ 47.46 प्रति अमरीकी डॉलर पर रहा था। विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा वित्त वर्ष 2010 के 29.0 बिलियन अमरीकी डॉलर की तुलना में वित्त वर्ष 2011 में 29.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की राशि का निवेश किया गया जो देश की अर्थव्यवस्था में सुधार का परिचायक है। वर्ष के दौरान भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 26.4 बिलियन अमरीकी डॉलर की वृद्धि हुई और यह 305.5 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया।

हालांकि विकास दर अच्छी रही पर खाद्यान्नों, ईंधन और पण्य वस्तुओं की ऊंची कीमतों के कारण मुद्रास्फीति चिंता का एक प्रमुख विषय बनी रही। अप्रैल से जून 2010 के दौरान मुद्रास्फीति के दो अंकों में सुर्खियों में बने रहने के बाद अगस्त 2010 में थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति घटकर 8.9% और नवंबर 2010 में फिर से घटकर 8.2% पर आ गई किंतु दिसंबर 2010 में यह स्थिति पलट गई और जरूरी खाद्य वस्तुओं तथा ईंधन की कीमतों के अचानक बढ़ जाने के कारण मुद्रास्फीति बढ़कर 9.4% तक पहुंच गई। अंत में, मार्च 2011 तक, वर्ष-दर-वर्ष थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति 9.02% पर आ गई जो मार्च 2010 के स्तर 10.36% से कम थी।

मुद्रास्फीति की चिंताजनक स्थिति के चलते भारतीय रिजर्व बैंक को 20 अप्रैल 2010 और 17 मार्च 2011 के बीच कठोर मौद्रिक नीति अपनानी पड़ी। इस दौरान भारतीय रिजर्व बैंक ने रेपो और रिवर्स रेपो दर में सात बार वृद्धि की। वर्ष के दौरान रेपो दर 175 आधार अंकों की वृद्धि करके 5.0% से 6.75%, रिवर्स रेपो दर 225 आधार अंकों की वृद्धि करके 3.50% से 5.75% कर दी गई और आरक्षित नकदी निधि अनुपात में 25 आधार अंकों की वृद्धि करके इसे 5.75% से 6.0% कर दिया गया। अक्टूबर 2010 में व्यस्ततम अवधि से कठोर मौद्रिक नीति अपनाने और ऋणों में अचानक वृद्धि होने से अर्थव्यवस्था में नकदी की स्थिति कठोर रही। नकदी पर दबाव कम करने और सभी क्षेत्रों के लिए पर्याप्त ऋणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने कई उपाय किए जैसे दूसरी नकदी समायोजन सुविधा शुरू करना, खुले बाजार में प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय जिसमें ₹ 48,000 करोड़ मूल्य की सरकारी प्रतिभूतियों की वापसी खरीद शामिल है और एसएलआर में कटौती करना, शुरू में 200 आधार अंकों की अस्थायी कटौती करके इसे 25% से 23% करना और बाद में दिसंबर 2010 में 100 आधार अंकों की स्थायी कटौती करके इसे 24% पर लाना।

इन सभी उपायों से बैंकिंग क्षेत्र में ऋण देने में सहायता मिली जो अखिल अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक ऋणों में 21.5% की वृद्धि के रूप में परिलक्षित हुई। यह वृद्धि जमाराशियों में 15.9% की धीमी वृद्धि के बावजूद हुई। नीतिगत प्रभाव के चलते वर्ष के दौरान जमाराशियों और ऋणों दोनों की ब्याज दरों में वृद्धि हुई। बड़े बैंकों का पीएलआर

Directors' Report

Management Discussion And Analysis

Economic Backdrop and Banking Environment

The Indian economy is back on track and has recovered smartly from the aftermath of the global crisis of 2007-09. GDP grew by 8.5% in FY'11 from 6.8% in FY'09 and 8.0% in FY'10. Strong recovery in the agriculture sector, which rose by 6.6% in FY'11 against negligible growth (0.4%) in FY'10, has been the key underlying driver of higher GDP growth.

Industrial growth has been generally satisfactory but volatile. During 2010-11, the Index of Industrial Production (IIP) grew by 7.8% against 10.5% in the previous year though growth has ranged from 16.6% in April 2010 to 2.6% in December 2010. The growth rate of IIP remained above 10% in four out of twelve months, below 5% in five months, and around 7% in three months. However, consumer durables (20.9%), intermediate goods (8.8%) and capital goods (9.3%) recorded higher growth than overall IIP growth in FY'11, taking manufacturing sector growth to 8.3% in FY'11 against 8.8% in FY'10. The services sector, accounting for around three-fifth of GDP, grew by 9.2% in FY'11 against 9.7% in FY'10 largely due to moderation in 'Community, Social and Personal Services', which rose by 7.0% in FY'11 against 11.8% in FY'10. Nevertheless, 'Trade, Hotels, Transport & Communication' and 'Financing, Insurance, Real Estate & Business Services' registered higher growth of 10.3% (9.7% in FY'10) and 9.9% (9.2% in FY'10) respectively in FY'11.

With pickup in the growth momentum in developed countries, merchandise exports rose smartly by 37.6% in FY'11, while imports rose by 21.6%, shrinking the trade deficit to US \$104.8 bn, slightly lower than US \$109.6 bn in FY'10. The forex market experienced orderly movements and saw the Rupee move up from average ₹ 47.46 per US dollar in 2009-10 to

₹ 45.57 per US dollar during FY'11. Revival in the domestic economy was reflected in rise in net FII inflows of US \$29.4 bn in FY'11 against US \$29.0 bn in FY'10. During the year, India's foreign exchange reserves rose by US \$26.4 bn to US \$305.5 bn.

While the growth outlook remained robust, the year saw inflation emerge as a major concern driven by high food, fuel and commodity prices. After remaining in double digits from April to June 2010, headline WPI inflation came down to 8.9% in August 2010 and softened further to 8.2% in November 2010 but the trend reversed in December 2010 and inflation rose to 9.4% led by sudden spurt in prices of primary food articles and fuels. By end-March 2011, yoy WPI inflation stood at 9.02%, lower than 10.36% in March 2010.

Inflation concerns prompted RBI's tight monetary policy stance; between 20 April 2010 and 17 March 2011, RBI increased the Repo and Reverse Repo rate seven times. During the year, the Repo Rate was raised by 175 bps from 5.0% to 6.75%, Reverse Repo rate by 225 bps from 3.50% to 5.75% and the Cash Reserve Ratio was hiked by 25 bps from 5.75% to 6.0%. Monetary tightening and sharp credit growth beginning from the busy season in October 2010 saw liquidity conditions in the system remain tight. To ease pressure on liquidity and ensure adequate credit availability for all sectors, RBI introduced several measures including opening second LAF window, open market operations including buyback of government securities worth ₹ 48,000 crores and cut in SLR, initially temporary cut by 200 bps from 25% to 23% followed by a permanent reduction of 100 bps to 24% in December 2010.

All these measures supported bank lending which is reflected in the 21.5% rise in ASCB credit despite muted growth of 15.9% in deposits. Reflecting policy transmission, interest rates on both deposits and credit hardened during the year. While PLR of

वित्त वर्ष 2010 में 11.0-12.0% था जो 200 आधार अंक बढ़कर वित्त वर्ष 2011 में 13.0%-14.0% हो गया, इसी अवधि में 1-3 वर्ष वाली जमाराशियों की ब्याज दरें 6.0-7.50% से बढ़कर 7.75-9.50% हो गईं। वर्ष के दौरान एक अन्य महत्वपूर्ण घटना यह रही कि जुलाई 2010 से आधार दर व्यवस्था शुरू कर दी गई जिससे ब्याज दरें और अधिक पारदर्शी हो गईं। प्रारंभ में बड़े बैंकों की आधार दर 7.5-8.25% के बीच रही किंतु भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा कठोर मौद्रिक नीति अपनाए जाने के कारण यह मार्च 2011 तक बढ़कर 8.25%-9.50% पहुँच गई।

आईएमएफ के नवीन अनुमानों के अनुसार विश्व अर्थव्यवस्था में वर्ष 2010 में 5% की वृद्धि होने की संभावना है जो हाल के वर्षों में उच्चतम होगी। यद्यपि उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों की विकास दर दमदार रही और अमरीका और यूरो क्षेत्र वाले देशों में विकास दर तेज हो रही है, तथापि मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका में संकट के कारण विश्व अर्थव्यवस्था में सुधार की गति अनिश्चित होती जा रही है। इसके अलावा, पहले से ऊंची खाद्यान्न और अन्य पण्य वस्तुओं की कीमतों पर तेल की कीमतों की वृद्धि की मार से मुद्रास्फीति की स्थिति और अधिक चिंताजनक हो गई है। विकास की चिंता दूर हुई तो मुद्रास्फीति और कठोर मौद्रिक नीति की स्थिति पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक हो गया। ऐसी स्थिति में देश कीमतों और वित्तीय स्थिरता से समझौता किए बिना उच्चतर विकास दर का लक्ष्य रखेंगे जिससे मुद्रास्फीति बढ़ने की आशंकाओं के बीच संतुलन बनाए रखते हुए विकास दर भी बढ़ती रहे।

वित्तीय निष्पादन

लाभ

वर्ष 2010-11 के लिए बैंक का परिचालन लाभ ₹ 25,335.57 करोड़ रहा जबकि वर्ष 2009-10 में यह ₹ 18,320.91 करोड़ था। इस प्रकार इसमें 38.29 प्रतिशत की उत्कृष्ट वृद्धि दर्ज हुई। वर्ष 2010-11 के लिए बैंक को ₹ 8,264.52 करोड़ का निवल लाभ हुआ जबकि वर्ष 2009-10 में यह ₹ 9,166.05 करोड़ रहा था। इस प्रकार इसमें 9.84 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई।

यद्यपि निवल ब्याज आय में 37.41 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि अन्य आय में 5.72 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उच्चतर स्टाफ लागत और अन्य व्ययों के कारण परिचालन व्ययों में 13.27 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई।

लाभांश

बैंक ने पिछले वर्ष की तरह लाभांश ₹ 30/- प्रति शेयर (300%) की दर पर बरकरार रखा है।

निवल ब्याज आय

बैंक की निवल ब्याज आय में 37.41% की वृद्धि हुई और वर्ष 2010-11 में यह बढ़कर ₹ 32,526.41 करोड़ हो गई जबकि वर्ष 2009-10 में यह ₹ 23,671.44 करोड़ रही थी।

वर्ष के दौरान वैश्विक परिचालनों से सकल ब्याज आय ₹ 70,993.92 करोड़ से बढ़कर ₹ 81,394.36 करोड़ हो गई और इसमें 14.65% की वृद्धि दर्ज हुई। ऐसा मुख्यतः अग्रिमों एवं विनिधानों पर उच्चतर ब्याज आय होने के कारण हुआ।

अग्रिमों की राशि अधिक रहने से भारत में अग्रिमों पर ब्याज आय वर्ष 2010-11 में बढ़कर ₹ 56,960.97 करोड़ हो गई, जबकि वर्ष 2009-10 में यह ₹ 47,633.47 करोड़ थी। भारत में अग्रिमों पर औसत आय वर्ष 2009-10 के 9.66% से गिरकर वर्ष 2010-11 में 9.56% हुई। विदेश स्थित कार्यालयों के अग्रिमों पर ब्याज आय में 0.53% की मामूली सी वृद्धि हुई।

भारत में कोषीय परिचालनों में नियोजित संसाधनों से आय में 3.67% की वृद्धि हुई, जिसका मुख्य कारण नियोजित औसत संसाधनों की मात्रा और औसत आय में वृद्धि होना था। यह औसत आय, जो वर्ष 2009-10 में 6.52% थी, वर्ष 2010-11 में बढ़कर 7.02% तक हो गई।

वैश्विक परिचालनों का कुल ब्याज व्यय वर्ष 2009-10 में ₹ 47,322.48 करोड़ था, जो वर्ष 2010-11 में बढ़कर ₹ 48,867.96 करोड़ हो गया। भारत में जमाराशियों पर ब्याज व्यय में पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2010-11 के दौरान 0.21% की कमी आई, जबकि भारत में जमाराशियों के औसत स्तर में 9.99% की वृद्धि हुई थी। जमाराशियों की औसत लागत वर्ष 2009-10 के स्तर 5.80% से घटकर वर्ष 2010-11 में 5.26% रह गई।

गैर-ब्याज आय

वर्ष 2010-11 में गैर-ब्याज आय की राशि ₹ 15,824.59 करोड़ रही, जबकि वर्ष 2009-10 में यह ₹ 14,968.15 करोड़ थी। इस प्रकार इसमें 5.72% की वृद्धि दर्ज हुई।

वर्ष के दौरान, बैंक ने भारत और विदेश में स्थित अपने सहयोगी बैंकों/अनुषंगियों और संयुक्त उद्यमों से लाभांश के रूप में ₹ 827.73 करोड़ (पिछले वर्ष ₹ 573.48 करोड़) प्राप्त किए।

परिचालन व्यय

ग्रेजुटी एवं पेंशन के लिए उच्च प्रावधान करने और स्टाफ संख्या में वृद्धि होने से स्टाफ लागत में 13.53% की वृद्धि हुई और वर्ष

major banks rose by 200 bps from 11.0-12.0% in FY'10 to 13.0-14.0% in FY'11, rates for 1-3 year deposits rose from 6.0-7.50% to 7.75-9.50% in the same period. Another important development during the year was introduction of the Base Rate system from July 2010, bringing greater transparency in interest rates. Initially, base rate of major banks was in the range of 7.5-8.25% but following monetary tightening by RBI, this rose to 8.25-9.50% by March 2011.

Latest projections by IMF show that the global economy has grown by 5% in 2010, one of the highest in recent years. However, while growth in emerging market economies remains strong and growth in the US and the Euro area is gaining momentum, the sharp increase in oil prices as a result of the turmoil in the Middle East and North Africa is adding uncertainty to the pace of global recovery. Further, coming on top of already elevated food and other commodity prices, the spike in oil prices has engendered inflation concerns. With growth worries fading, the focus has shifted to inflation and policy tightening. So going forward, countries will aim to achieve higher growth without compromising on price and financial stability thus balancing inflation expectations and maintaining growth momentum.

Financial Performance

Profit

The Operating Profit of the Bank for 2010-11 stood at ₹ 25,335.57 crores as compared to ₹ 18,320.91 crores in 2009-10 registering an excellent growth of 38.29%. The Bank has posted a Net Profit of ₹ 8,264.52 crores for 2010-11 as compared to ₹ 9,166.05 crores in 2009-10 registering a decline of 9.84%.

While Net Interest Income recorded a growth of 37.41%, the Other Income increased by 5.72%, Operating Expenses increased by 13.27% attributable to higher staff cost and other expenses.

Dividend

The Bank has maintained dividend @ ₹ 30.00 per share (300%) as paid in the last year.

Net Interest Income

The Net Interest Income of the Bank registered a growth of 37.41% from ₹ 23,671.44 crores in 2009-10 to ₹ 32,526.41 crores in 2010-11. This was due to growth in interest income on advances and investments.

The gross interest income from global operations rose from ₹ 70,993.92 crores to ₹ 81,394.36 crores during the year registering a growth of 14.65%. This was mainly due to higher interest income on advances and investments.

Interest income on advances in India registered an increase from ₹ 47,633.47 crores in 2009-10 to ₹ 56,960.97 crores in 2010-11 due to higher volumes. The average yield on advances in India decreased from 9.66% in 2009-10 to 9.56% in 2010-11. Interest income on advances at foreign offices has grown moderately by 0.53%.

Income from resources deployed in Treasury operations in India increased by 3.67% mainly due to higher average resources deployed and increase in average yield. The average yield, which was 6.52% in 2009-10, has increased to 7.02% in 2010-11.

Total interest expenses of global operations increased from ₹ 47,322.48 crores in 2009-10 to ₹ 48,867.96 crores in 2010-11. Interest expenses on deposits in India during 2010-11 recorded a decrease of 0.21% compared to the previous year, whereas the average level of deposits in India grew by 9.99%. The average cost of deposits has declined from 5.80% in 2009-10 to 5.26% in 2010-11.

Non-Interest Income

Non-interest income stood at ₹ 15,824.59 crores in 2010-11 as against ₹ 14,968.15 crores in 2009-10 registering a growth of 5.72%.

During the year, the Bank received an income of ₹ 827.73 crores (₹ 573.48 crores in the previous year) by way of dividends from Associate Banks/subsidiaries and joint ventures in India and abroad.

Operating Expenses

There was an increase of 13.53% in the Staff Cost from ₹ 12,754.65 crores in 2009-10 to ₹ 14,480.17 crores in 2010-11 attributable to higher gratuity and pension